प्रथम अध्याय

अ) प्रतीक शब्द का अर्थ,

ब) प्रतीक की परिभाषा-भारतीय एवं पाश्चात्य,

क) प्रतीक की महत्व-प्रतिष्ठा ।

प्रथम अध्याय

'प्रतीक' शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में हिन्दी शब्द सागर में लिखा है, 'प्रतीयते अनेन इति प्रतीकम्' अर्थात् जिससे प्रतीति हो या किसी वस्तु की अभिव्यक्ति हो, वह प्रतीक है। 'प्रतीक' की व्युत्पत्ति पर विचार करते समय संस्कृत साहित्य के प्रसिध्द वैयाकरण भट्टोजी दीक्षित के पुत्र भानु दीक्षित ने 'अमर कोष' की व्याख्या में प्रतीक शब्द की सिध्दि की है, 'किसी अगोचर वस्तु का प्रतिनिधि।'

'प्रतीक' शब्द की व्युत्पत्ति का उल्लेख करते हुए अपने 'गीता रहस्य' में श्री. तिलक जी ने लिखा है — '' 'प्रति' उपसर्ग के साथ 'इक' क्रिया का योग होने पर 'प्रतीक' शब्द की सिध्दि हुई है, अर्थात् प्रति – अपनी ओर, इक – झुका हुआ, अर्थात् जब किसी वस्तु का कोई एक भाग पहले गोचर होता है, फिर आगे उस वस्तु का ज्ञान होता है, तब उस भाग को 'प्रतीक' कहते हैं।'[1]

'प्रतीक' शब्द बहुत ही पुरातन शब्द है। इसका प्रयोग वेदों में भी मिलता है – 'दधाते ये अमृते सुप्रतीके।'[2] इस मंत्र के भाष्य में 'सायण' ने 'प्रतीक' शब्द का अर्थ 'रूप' किया है। 'अभिधान रत्नमाला' में 'प्रतीक'

---

१ बा.गं. तिलक : गीता रहस्य : पृष्ठ क्र.४२५।

२ ऋग्वेद : १। १८५। ६

को पुल्लिंग वाचक शब्द माना गया है और इसका अर्थ दिया गया है – ` प्रतीयते प्रत्येति वा प्रति एकदेश: अंग: अवयव: ` । मानक हिन्दी कोश में ` प्रतीक ` शब्द के, ` अंग, अवयव,अंश,भाग,किसी वस्तु के अनुरूप वैसी ही बनायी हुई,वैसी ही दूसरी वस्तु, प्रतिरूप,प्रतिमा और मूर्ति आदि अर्थ दिये गये हैं । `[१]
डॉ. संसारचंद्र के अनुसार ` प्रतीक का अर्थ, वह वस्तु है, जो अपनी मूल वस्तु में पहुँच सके अथवा वह चिह्न, जो मूल का परिचायक हो । `[१]

सामान्यत: प्रतीक शब्द का प्रयोग अंग्रेजी, संस्कृत एवम् हिन्दी भाषा में, ` चिह्न `, ` प्रतिनिधि `, ` प्रतिरूप `, ` प्रतिमा ` आदि अर्थों में उपलब्ध होता है ।[२]

भारतीय साहित्य शास्त्र में प्रतीक के लिए ` उपलक्षण ` शब्द आया है, जिसके अनुसार जब कोई नाम या वस्तु इस रूप में व्यवहृत हो, कि वह उस गुण में अपने समान अन्य वस्तुओं के गुणों का भी ज्ञान करा दे, तो उस शब्द को ` उपलक्षण ` कहा जा सकता है । ` एकपदेन तदर्थान्यपदार्थकथनमुपलक्षणम् ` । संस्कृत – हिन्दी कोश में ` उपलक्षण ` पर प्रकाश डालते हुए लिखा गया है – अंकित करना,चिह्न किसी ऐसी बात का ध्वनित होना जो वस्तुत: कही न गयी हो, किसी अतिरिक्त वस्तु की ओर या अन्य किसी समरूप पदार्थ की ओर संकेत किया गया हो ।

परंतु आधुनिक साहित्य में प्रतीक जिस भाव को व्यक्त करता है, वह पूर्णत: ` उपलक्षण ` से गृहीत नहीं है, जिसके मूल में यह कहा जा सकता है, कि हमारे अधुनातन साहित्य पर अंग्रेजी साहित्य का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है, अत: प्रतीक भी उस प्रभाव से अछूता नहीं है । ` प्रतीक ` का पर्यायवाची शब्द अंग्रेजी में ' Symbol ' है । ` सिम्बल ` शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक क्रिया से हुई है । जिसका अर्थ

---

१ मानक हिन्दी कोश : खण्ड ४ : पृ.क्र.६१४ ।

२ दि कन्साइज ऑक्सफर्ड डिक्शनरी –

१ ` सिम्बल, मार्क , साइन ऑफ रा ऑब्जेक्ट ` – पृ.क्र.१३११ ।

है - ' Chance, encounter conflict, union, intension ' परंतु ग्रीक क्रिया का यह भाव 'सिम्बल' शब्द से व्यंजित नहीं होता है। वस्तुत: प्रतीक वह है, जो किसी अन्य वस्तु के लिए प्रयुक्त होता है, अथवा उसकी ओर संकेत करता है, जबकि ग्रीक-क्रिया, जिसका अर्थ है -- To compare, संकेत करती है, कि संकेत और चिह्न में तुलना का भाव प्रारंभ से ही वर्तमान था और इनके आधुनिक प्रयोगों में यह भाव आज भी किन्हीं अर्थों में विद्यमान है। अस्तु, कहा जा सकता है, 'सिम्बल' शब्द या उसके पर्याय प्रतीक का अर्थ - विकास स्वतंत्र रूप से हुआ है। 'सिम्बल' में ग्रीक-क्रिया का भाव लुप्त हो गया है और प्रतीक में भी 'उपलक्षण' का अर्थ प्राय: समाप्त सा हो गया है।'[१]

स्थूल रूप से तो भाषा और शब्द को भी प्रतीक माना जा सकता है, क्योंकि प्रत्येक शब्द अपने आप में किसी न किसी भावात्मक या दृश्यात्मक सत्य को छिपाए रखता है, परंतु प्रतीक व्यंजनात्मक और भावात्मक स्तर पर विशिष्ट शब्द-समूह का द्योतक है, 'जिन्हें हम अनुभव अथवा अनुभूति की अवस्था विशेष का शाब्दिक प्रतिरूप कह सकते हैं।' विशुध्द रूप में यह अंग्रेजी 'सिम्बल' का पर्यायवाची है और इसके शाब्दिक अर्थ है -चिह्न, संकेत, प्रतिरूप, प्रतिनिधि, प्रतिमा, मूर्ति, निशान आदि।

अर्थों का यह वैविध्य प्रतीक शब्द की व्यापकता को प्रमाणित करता है। ऊपर कहा गया है, कि प्रतीक विशुध्द रूप से अंग्रेजी 'सिम्बल' का पर्याय है, किंतु मूल रूप में 'सिम्बल' का अनुवाद होने पर भी संस्कृत के 'प्रति' उपसर्ग से इस शब्द के संबंध की अवहेलना नहीं की जा सकती। तभी यह 'प्रतिलक्षण' का पर्याय भी स्वीकार किया गया है।

---

१ सरोजनी पाण्डेय - हिंदी सूफी काव्य में प्रतीक योजना - पृ.क्र.२०-२१।

जब किसी वस्तु का कोई एक भाग पहले गोचर होता है, और फिर आगे उस वस्तु का ज्ञान हो जाता है, तब उस भाग को प्रतीक कहते हैं। उदाहरणार्थ -- कबीर का प्रसिध्द दोहा है ---

' माली आवत देख के कलियाँ करी पुकार।
फूले फूले चुन लिये, कल ही हमारी बार ।।

यहाँ एक भाग पहले गोचर होता है, कि माली को आते देख कर कलियाँ चिल्लाने लगती हैं, यह एक एक फूल चुन लेगा, अब कल मेरी भी बारी आ जाएगी। ' यहाँ प्रतीकात्मकता दिखाई देती है। माली मृत्यु का प्रतीक है, तो कलियाँ मानव का। मृत्युरूपी माली आकर एक एक को चुन कर ले जाता है। आज नहीं तो कल अपनी भी बारी आ जाएगी, यह देख कर कलियाँ रूपी मानव चिल्लाने लगता है। इस प्रकार एक भाग पहले गोचर होता है और आगे दूसरा भाग गोचर होता है। उस भाग को प्रतीक कहते हैं। ' प्रतीक द्वारा अप्रस्तुत वस्तु का बोध या परिज्ञान कराया जाता है। तात्पर्य यह है, कि प्रतीक हमारी इंद्रियों के सम्मुख ऐसी भावनाओं या वस्तुओं को रखता है, जो अन्य वस्तुओं (भावों) या अन्यार्यों का बोध करा सके। इसी कारण प्रतीक विधान में अप्रस्तुत अर्थ अधिक महत्व रखता है। और यही इसका अभिप्रेत भी है।' Symbol - a word or an image, that signifies something other than what it represents' लगभग यही विचार डेविड डाइचेस ने प्रस्तुत किया है, कि सामान्यत: प्रतीक से तात्पर्य एक अभिव्यंजना से है, जो कहने की अपेक्षा व्यंजनाश्रित अधिक होती है।' [१]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रतीक का स्पष्टीकरण करते हुए ' चिंतामणि' में लिखा है -- किसी देवता का प्रतीक सामने आने पर जिस प्रकार उसके स्वरूप और उसकी विभूति की भावना चट मन में आ जाती है, उसी प्रकार काव्य में आई हुई कुछ वस्तुएँ, विशेष मनोविकारों या भावनाओं को जाग्रत कर देती हैं। जैसे -

---

१ It (Symbol) Simply means an expression which more thán it says :-- डेविड डाइचेस - अ स्टडी ऑफ लिटरेचर - -- पृ.क्र.३६ ।

'कमल' माधुर्यपूर्ण कोमल सौंदर्य की भावना जाग्रत करता है। 'कुमुदिनी' शुभ्रहास की, 'चंद्र' मृदुल आभा की, 'समुद्र' प्राचुर्य, विस्तार और गंभीरता की, 'आकाश' सूक्ष्मता और अनंतता की। इसी प्रकार 'सर्प' से क्रूरता और कुटिलता का, 'अग्नि' से तेज और क्रोध का, 'वाणी' से विद्या का, 'चातक' से नि:स्वार्थ प्रेम का संकेत मिलता है। [१]

इस प्रकार प्रतीक किसी वस्तु विशेष या भावसमूहों का ऐसा संकेत है, जो अगोचर एवं अतींद्रिय है, जिसका केवल मस्तिष्क द्वारा अनुभव किया जा सकता है। [२]

प्रतीक का कभी-कभी विशिष्ट अर्थ 'संकेत' भी लिया जाता है। लेकिन 'संकेत' प्रतीक के समान ही एक विधान है। संकेत साहित्य में वही काम करता है, जो प्रतीक, किंतु दोनों में सूक्ष्म अंतर है। संस्कृत काव्य शास्त्र में भी संकेत को वह शक्ति कहा गया है, जिससे अभिधेयार्थ का बोध होता है। नाथ, सिध्द तथा निर्गुण कवियों के आध्यात्मिक 'संकेत' प्रतीक ही कहे जाते हैं। "Symbol may be best defined as a Special kind of sign "[3] विशिष्ट प्रकार के संकेत ही 'प्रतीक' हैं। किंतु सभी 'संकेत' प्रतीक नहीं कहला सकते।

"'शब्दार्थ-दर्शन' के अनुसार 'प्रतीक' का अर्थ है, जो किसी ओर चलाया, बढ़ाया, या लगाया गया हो। .... संज्ञा रूप में प्रतीक के अर्थ - अंग, अंश, आकार, मुख आदि और भी कई अर्थ हैं, इसके सिवा प्रतिनिधि की तरह यह प्रतिमा और मूर्ति का भी वाचक होता है। परंतु इससे आगे बढ़ने पर 'प्रतीक' कुछ दूसरे प्रकार के अर्थों का वाचक हो गया है।"[४] वैसे अन्य और स्थानों पर 'प्रतीक' शब्द के सामान्य अर्थ लगभग एक से ही दिये गये हैं। 'प्रतीक' का विशिष्टार्थ महत्वपूर्ण है और अपनी मौलिक उपयोगिता रखता है। वास्तव में 'प्रतीक' का

---

१ आचार्य रामचंद्र शुक्ल - चिंतामणि (द्वितीय भाग) पृ.क्र.११८।

२ डॉ.रमेश गौतम - हिंदी के प्रतीक नाटक - पृ.क्र.२०-२१।

३ डब्ल्यू.एम्.अर्बन - लैंग्वेज अण्ड रिअलिटी - पृ.क्र.४०२।

४ रामचंद्र वर्मा - शब्दार्थ - दर्शन - पृ.क्र.४२२।

विशिष्ट अर्थ, संदर्भ या तथ्य के प्रतिनिधि रूप में बराबर प्रयुक्त होते-होते साहित्य के अंतर्गत प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति की एक अनिवार्य प्रक्रिया बन गया है। आज प्रतीक अपनी शाब्द सीमा और सामान्य अर्थ की परिमित से बहुत आगे बढ़ चुका है। उसका विशिष्ट अर्थ विश्लेषण भी उसे स्पष्ट करने में अक्षम सिध्द होता है, क्योंकि प्रतीक साहित्य की सभी प्रमुख विधाओं में अभिव्यक्ति की विशिष्ट कलात्मक प्रक्रिया या नियोजन बन गया है, जो सूक्ष्म सौंदर्य संवेदना और अमूर्त पदार्थों को भी जीवित स्वरूप प्रदान कर रहा है।[१]

प्रतीक की परिभाषा --

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अपने विचारों, भावों, संवेगों और अनुभूतियों को दूसरे सामाजिकों पर प्रकट करता है। उसकी इस अभिव्यक्ति का माध्यम है, उसकी भाषा, किंतु कभी - कभी भावानुभूति जब साधारण शब्दावली द्वारा अभिव्यक्त नहीं हो पाती, उसे पूर्ण प्रस्फुरण प्राप्त नहीं हो पाता, तब वह विवश होकर अन्य ऐसे साधनों का सहारा लेता है, जिनकी सहायता से वह अपना मंतव्य पूर्ण रूपेण प्रस्तुत कर सके। यह कठिनाई केवल साधारण मनुष्य के सम्मुख ही प्रस्तुत नहीं होती, अपितु अच्छे से अच्छे कवि, दार्शनिक एवं कलाकारों को भी इसका सामना करना पड़ता है। जब भाषा की साधारण शब्दावली द्वारा कवि अपने भाववेगों को, दार्शनिक अपनी रहस्यानुभूतियों को, एवं कलाकार अपने संवेगों को प्रकट कर पाने में अपनी अक्षमता का अनुभव करता है, तो वह ऐसे साधनों की सहायता लेता है, जिससे न केवल वह अपने को यथातथ्य रूप में अभिव्यक्त कर सके, अपितु साथही अपनी काव्यात्मकता, संवेदनीयता एवं तीव्रता की रक्षा कर सके। काव्य में अलंकार-योजना, अप्रस्तुत विधान, प्रतीक-प्रयोग आदि ऐसे ही कुछ साधन हैं, जो कहीं बिम्ब खड़ा करके, और कहीं संकेत द्वारा मानव के विचारों, भावों आदि का पूर्ण विश्लेषण करते हैं। हृदय के गूढ़ातिगूढ़

---

१ डॉ. केदारनाथ सिंह : हिन्दी के प्रतीक नाटक और रंगमंच -पृ.क्र.१८।

भावों , सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनुभूतियों और मनोवेगों को सम्यक् अभिव्यक्ति प्रदान करने में जितनी सफलता प्रतीकों को प्राप्त हुई है, उतनी अभिव्यक्तिपरक अन्य साधनों को नहीं । परिणामत: विश्व की आधुनिक समस्त प्रमुख शक्तिशाली भाषाओं में प्रतीकों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में पाया जाता है । भारतीय आधुनिक भाषाएँ भी प्रतीकों से वंचित नहीं हैं, और हिन्दी भाषा में तो प्रतीकों का इतना बाहुल्य है कि आधुनिक युग में 'प्रतीकवाद' नामक एक अलग 'वाद' ही चल पड़ा है ।'[१]

साहित्य में विशिष्ट कलात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रतीक योजना की जाती है । इसके उपयोग से जीवन का कोई क्षेत्र अछूता नहीं है । 'प्रतीकों' का उद्गम मानव-मन का एक अभियान है ।'[२] अत: जीवन के हर क्षेत्रों, धर्म,कला,विज्ञान,दर्शन साहित्य आदि में मनुष्य की वाणी को जीवंत भौतिक स्वरूप ,प्रतीकों ने ही दिया है । मनुष्य प्रतीकों की दुनिया में ही रहता है । विद्वानों ने सृष्टि के पहले प्राणी द्वारा उच्चरित पहले शब्द से ही "प्रतीकों' का प्रारंभ माना है ।[३]

विचार करने पर विदित होता है, कि भारत में प्रतीकों का प्रयोग कोई नया प्रयास नहीं है । हमारे प्राचीनतम् धर्मग्रंथ - वेदों में भी प्रतीकों का पर्याप्त प्रयोग हुआ है । यहाँ तो ऐसी अनेक ऋचाएँ हैं, ऐसी अनेक शक्तियाँ हैं, जो पूर्णरूपेण प्रतीकात्मक हैं । प्रतीक शब्द का प्रयोग भी न केवल वेदों में, अपितु परवर्ती संस्कृत साहित्य में भी हमें उपलब्ध होता है । यद्यपि आधुनिक हिन्दी काव्य क्षेत्र में प्रतीक की जो भावना परिलक्षित होती है, वह निश्चित ही अंग्रेजी के 'सिम्बल' शब्द की व्याख्या के अधिक संनिकट है, किंतु हिन्दी के पूर्ववर्ती भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन कवियों के काव्यों में संस्कृत साहित्य से चली आती हुई प्रतीक परंपरा को ही विशेष प्रश्रय मिला है । युग के साथ यद्यपि प्रतीक के

---

१ डॉ.चित्रा शर्मा - कामायनी में प्रतीक विधान - पृ.क्र.२ ।

२ डॉ.वीरेन्द्र सिंह - प्रतीक दर्शन - पृ.क्र.९ ।

३ डॉ.केदारनाथ सिंह - हिन्दी के प्रतीक नाटक और रंगमंच - पृ.क्र.१८ ।

मान में भी परिवर्तन होता रहा है, तथापि सभी युगों में प्रतीक की भावना मूलत: एक ही रही है।[१]

प्रतीक की साहित्यिक उपादेयता अपना मौलिक स्थान रखती है। प्रतीक साहित्य में बहुचर्चित विषय है। इसे पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने अपने ढंग से परिभाषित किया है।

(१) अमरकोश --

प्रतीक का उल्लेख करते हुए अमरकोशकार लिखते हैं, कि 'अंगं. प्रतीकोऽवयवोऽपघानोऽथ कलेवरम्'[२] अर्थात अंग,अवयव,उपधान सभी प्रतीक के पर्याय हैं।

(२) मानक हिन्दी कोश --

'मानक हिन्दी कोश' में प्रतीक को इस प्रकार परिभाषित किया गया है 'प्रतीक वह गोचर या दृश्य,तथ्य या वस्तु है, जो किसी अगोचर, अदृश्य या अप्रस्तुत तथ्य या वस्तु के ठीक या बहुत-कुछ अनुरूप होने के कारण उसके गुण-रूप का परिचय कराने के लिए उसका प्रतिनिधित्व करती हो। जैसे - देव-मूर्ति ईश्वर का प्रतीक है।[३]

(३) हिन्दी साहित्य कोश --

'हिन्दी साहित्य कोश' में प्रतीक की परिभाषा इस प्रकार दी गई है 'प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य (अथवा गोचर) वस्तु के लिए किया जाता है,जो किसी अदृश्य (अगोचर या अप्रस्तुत) विषय का प्रतिविधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है, अथवा कहा जा सकता है,

---

१ डॉ.चित्रा शर्मा - कामायनी में प्रतीक विधान - पृ.क्र.३।

२ अमरकोश : मनुष्यवर्ग , श्लोक सं.७०।

३ मानक हिन्दी कोश - रामचंद्र वर्मा - खण्ड-३- पृ.क्र.६१४।

कि किसी अन्य स्तर की, समान रूप द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तु प्रतीक है।`[१]

(४) अंग्रेजी साहित्य का बृहत् कोश --

इसमें प्रतीक की व्याख्या इस प्रकार मिलती है ` प्रतीक`(चिह्न) शब्द का प्रयोग किसी ऐसी प्रत्यक्ष एवं गोचर वस्तु के लिए किया जाता है, जो मन में किसी अप्रस्तुत वस्तु की अनुभूति, उस वस्तु के साथ अपने साहचर्य संबंध के कारण करा देती है। प्रतीक के साथ उसका साहचर्य - संबंध ही हमारी तत्संबंधी मानसिक अनुभूति का आधार होता है।`[२]

(५) गीता रहस्य --

प्रतीक - प्रति (अपनी ओर) इक (झुका हुआ) ` जब किसी वस्तु का कोई एक भाग पहले गोचर होता है, फिर आगे उस वस्तु का ज्ञान हो तब उसको प्रतीक कहते हैं।`[३]

(६) आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार

` किसी देवता का प्रतीक सामने आने पर जिस प्रकार उसके स्वरुप और उसके विभूति की भावना चट मन में आ जाती है, उसी प्रकार, काव्य में आयी हुई कुछ वस्तुएँ विशेष मनोविकारों या भावनाओं को जाग्रत कर देती हैं ... जैसे समुद्र से प्राचुर्य, विस्तार और गंभीरता का संकेत मिलता है।`[४]

(७) रामचंद्र वर्मा के अनुसार --

` प्राय: हमारे ध्यान में ऐसी बहुत-सी बातें और वस्तुएँ आती हैं, जो

---

१ धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी साहित्य कोश - भाग-१, पृ.क्र.३९८।

२ एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका - ग्रंथ २६, पृ.क्र.२८४।

३ तिलक - गीता रहस्य - पृ.क्र.४१५।

४ रामचंद्र शुक्ल - चिंतामणि भाग-२ - पृ.क्र.११८।

हमारे अगोचर अदृश्य या अप्रस्तुत होती है और तब उसके आकार, कार्य, व्यवहार, व्यापार आदि की कल्पना करके चित्रण, रेखन आदि के द्वारा उसका कोई संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करते हैं और उसी को मूल वस्तु का प्रतीक कहते हैं।` १

(८) श्री परशुराम चतुर्वेदी --

`प्रतीक` विषयक अपने मत को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं -- `प्रतीक का अर्थ है - चिह्न, प्रतिरूप, प्रतिमा। साहित्य में प्रतीकों का प्रयोग बहुधा उपलक्षण के रूप में होता आया है। भावों या मनोविकारों को पूर्ण रूप से शब्दों में प्रकट करना, हर समय संभव नहीं होता, इसीलिए भावों या मनोविकारों की व्यंजना के लिए काव्य में प्रतीकों का व्यवहार होता आया है।` प्रतीक` से अभिप्राय किसी वस्तु की ओर इंगित करने वाला, न तो संकेत मात्र है और न उसका स्मरण दिलाने वाला चित्र या प्रतिरूप है। यह उसका एक जीता जागता एवं पूर्णत: क्रियाशील प्रतिनिधि है।

(९) श्री गोपालसिंह `क्षेत्र`

ने `प्रतीक` की विवेचना करते हुए लिखा है, कि `प्रतीक` शब्द `प्रति` पूर्वक गमनार्थक `इण्` धातु से बना है।` गति: गमनम् , गति: प्राप्ति: , गतिर्ज्ञानम्` के अनुसार इसका अर्थ चलना, प्राप्ति या पहुँचना और ज्ञान होता है। इसके अनुसार प्रतीक का अर्थ होता है - वह वस्तु, जो अपनी मूल वस्तु में पहुँच सके अथवा वह मुख्य चित्र, जो मूल का परिचायक हो।

या शब्द संस्कृत में प्रतिमा, चिह्न अथवा संकेत के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मंत्रादि के अक्षर भी, जिनसे पूरे का बोध हो, प्रतीक कहे जाते हैं। मूर्तिपूजा के

---

१ रामचंद्र वर्मा - शब्दार्थ - दर्शन - पृ.क्र.४२२।

प्रसंग में प्रतीक-पूजा का भी उल्लेख होता है। मूर्ति किसी देवता अथवा महान आत्मा की प्रतिनिधि होती है। हम मूर्ति को पूजकर उस देवता अथवा महान आत्मा की पूजा का संतोष कर लेते हैं। हम कहते हैं, कि जीवन फूल और शूल से निर्मित है, तो हमारा यह अर्थ नहीं होता है, कि फूल और शूल के अतिरिक्त जीवन में कुछ है ही नहीं। ऐसे स्थल पर हमारा अभिप्राय होता है, 'फूल' की भाँति सुखद और 'शूल' की भाँति दु:खद है।[1]

(१०) डॉ.प्रेमनारायण शुक्ल 'प्रतीक' की परिभाषा देते हुए लिखते हैं,

'प्रतीक' का शाब्दिक अर्थ है- चिह्न'। प्रकृति के विभिन्न उपादानों और स्वरूपों के साथ नैत्यिक परिचय के कारण हमारा रागात्मक संबंध स्थापित हो जाता है। वह संबंध जब तक हृदयस्थ रहता है, तब तक इसकी अमूर्तावस्था रहती है, किंतु जब हम प्रकृति के पदार्थों का प्रयोग अपनी भाषा-भिव्यक्ति के साथ करते हैं, तब उस रागात्मक संबंध का मानो मूर्तिकरण कर देते हैं, यथा सुमनों का सौरभदान देखकर हमारे हृदय में एक प्रकार का विशिष्ट आनंदोल्लास उत्पन्न होता है। संस्कारवश इस क्रिया के प्रति हमारा हृदयस्थ राग तन्मयत्व प्राप्त कर लेता है। यह तन्मयता उस समय विशेष सजग हो उठती है, जब हम किसी उदार वृत्ति का चित्रण करते हैं और उदारता, त्याग आदि सद्प्रवृत्तियों का प्रभावोत्पादक चित्रण करने के लिए सुरभिवान् में लीन सुमनों की प्रतीक रूप में उपस्थित करते हैं। शब्दों के इसी प्रकार के प्रयोग का नाम 'प्रतीक-स्थापन' है।[2]

(११) डॉ.राजाराम रस्तोगी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि

प्रतीक का अर्थ होता है, प्रतिरूप या प्रतिमा अथवा वह वस्तु या भाव जो अंश होकर भी समग्र के लिए व्यक्त हो।'[3]

---

१ श्री गोपालसिंह 'सोम' - छायावाद के गौरव चिह्न - पृ क्र.२२६।

२ प्रेमनारायण शुक्ल - हिंदी साहित्य में विविध वाद - पृ.क्र.४६८-४६९।

३ डॉ.राजाराम रस्तोगी - हिन्दी साहित्य की अंतश्चेतना - पृ.क्र.२०५।

(१२) डॉ.सुधीन्द्र ने प्रतीक की व्याख्या करते हुए लिखा है --` प्रतीक वस्तुत: अप्रस्तुत की समस्त आत्मा,धर्म या गुण का समन्वित रुप लेकर आनेवाले प्रस्तुत का नाम है। प्रतीक, अप्रस्तुत का प्रस्तुत रुप में अवतार ही है।`[१]

(१३) डॉ.भगीरथ मिश्र - ` प्रतीक` को इस प्रकार स्पष्ट करते हैं --` अपने रुप-गुण-कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत वस्तु,भाव,विचार,क्रियाकलाप,देश, जाति, संस्कृति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है, तब वह प्रतीक कहलाता है।[२]

(१४) लक्ष्मीनारायण सुधांशु ने प्रतीकों के विषय में कहा है --` प्रत्येक भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनसे केवल अर्थ की ही अभिव्यक्ति नहीं होती, वरन् भावनाओं का उद्बोधन भी होता है, जिन वस्तुओं में तनिक भी निजी विशेषतापूर्ण आकर्षण है, जिन पर दीर्घ सांस्कृतिक वासना का प्रभाव पड़ा है, वे शब्द हमारे काव्य में प्रतीक का काम करते हैं। प्रतीकों के स्वरुपों में कुछ न कुछ ऐसी व्यंजना रहती है, जिससे भावनाओं के विकास के संकेत मिल जाते हैं।`[३]

(१५) डॉ.संसारचंद्र ने प्रतीकों को इस प्रकार से स्पष्ट किया है --` प्रतीक` और` संकेत` शब्दों का यौगिक अथवा रुढ अर्थ जो भी हो, उनका अधुनातन अर्थ, १९वीं शती में फ्रांस में उद्भूत तथा समस्त पाश्चात्य साहित्य में संक्रमित ` स्कूल ऑफ सिम्बालिज्म` से प्रभावित है, जिसका छायावाद ,रहस्वाद और प्रयोगवाद के निर्माण में काफी हाथ है। इसमें प्रस्तुत को छिपा हुआ रखकर ही प्रतीक के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। अथवा प्रस्तुत को वाच्य बनाकर

---

१ डॉ.सुधीन्द्र - हिंदी कविता में युगांतर - पृ.क्र.२६५-२६६।

२ डॉ.भगीरथ मिश्र - काव्य शास्त्र - पृ.क्र.२५५।

३ लक्ष्मीनारायण सुधांशु - काव्य में अभिव्यंजनावाद - पृ.क्र.१४५।

अप्रस्तुत की ओर संकेत भर कर देते हैं। [१]

(१६) डॉ.पद्मा अग्रवाल का कथन है, कि सामान्य भाषा में संक्षिप्तता, विशिष्टता,सरल बोध, सौंदर्य ग्रहण अभिप्राय की सांकेतिकता आदि से प्रतीक का प्रादुर्भाव होता है। पर मनोविश्लेषण की दृष्टि से इस शब्द को एक विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त करते हैं, जिसका अभिप्राय अंतश्चेतना की उन दबी हुई इच्छाओं को प्रकट करना है, जिनका स्वभाव प्रेम जैसा है। [२]

(१७) डॉ.रामकुमार वर्मा का कथन है, कि प्रतीक-सृजन कलापक्ष को लेकर अग्रसर होता है और उसमें समस्त चिंतन तथा भावना का संकेत एक व्यष्टि में केंद्रीभूत हो जाता है। [३]

पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं को देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है, कि लगभग सभी विद्वानों ने 'प्रतीक' के संबंध में एक समान समझ और निष्कर्ष को सामने रखा है।

(१८) एडविन बीवेन के अनुसार 'प्रतीक हमारी इंद्रियों के सामने ऐसी भावनाओं या वस्तुओं को रखता है, जो अन्य वस्तुओं या अन्यार्थों का बोध करा सके।' [४]

(१९) ओगडेन और रिचर्डस ने प्रतीक को किसी प्रसंग विशेष की ओर इंगित करने वाले संकेत के रुप में ही स्वीकार किया है। उनका कथन है, कि प्रतीक किसी विशेष प्रसंग को अपनी सीमा में बाँधता है। जब कोई वक्ता

---

१ डॉ.संसारचंद्र - हिन्दी काव्य में अन्योक्ति - पृ.क्र.६८।

२ डॉ.पद्मा अग्रवाल - सिम्बॉलिज्म - ए-सायकॉलॉजिकल स्टडी -पृ.क्र.११।

३ डॉ.वीरेन्द्रसिंह -हिंदी काव्य में प्रतीकवाद का विकास - भूमिका - पृ.क्र.१।

४ एडविन बीवेन - सिम्बॉलिज्म ॲंड बिलीफ - पृ.क्र.११।

प्रतीकों का प्रयोग करता है, जो वह अपनी मन:स्थित इच्छाओं को सम्प्रेषित करता है और श्रोता की धारणाओं की ओर संकेत करता है। इस प्रकार प्रतीक वह उच्चरित शब्द है, जो श्रोता को किसी विशेष प्रसंग की ओर संकेत करता है।`[१]

(२०) <u>ई.जोन्स</u> अंग्रेजी के प्रसिध्द विद्वान, अपनी धारणा व्यक्त करते हुए लिखते हैं ` प्रतीक अभिव्यक्ति के समस्त साधनों का एक समन्वित प्रतिनिधि है। यह एक शाश्वत स्थानापन्न है और ऐसे प्रच्छन्न एवं अप्रस्तुत की अभिव्यक्ति है, जिसके साथ उसकी सुस्पष्ट समान विशेषताएँ या गुण हो।`[२]

(२१) <u>श्री.सी.एम.बोवरा</u> के अनुसार,` अतिप्राकृतिक अनुभूतियों को दृश्यमान वस्तुओं की भाषा में सामान्य उद्देश्य के लिए नहीं, अपितु अतींद्रिय यथार्थ को उद्बुध्द करने वाले आसंगों के लिए की गयी अभिव्यक्ति प्रतीक है।`[३]

(२३) <u>श्री गार्डनर, यूनानी</u> तथा रोमन प्रतीकों की व्याख्या करते हुए लिखते हैं, ` प्रतीक उसे कहते हैं, जो देखने या सुनने में किसी विचार, भावना या अनुभव को व्यक्त करता हो, जो वस्तु केवल बुध्दि या कल्पना से ग्राह्य हो, उसकी ऐसी व्याख्या कर देना, कि आँखों के सामने आ जाये।`[४]

(२४) <u>लेंगर के अनुसार</u> -- ' A symbol is any device, whereby we are enabled to make an abstraction "[5]` प्रतीक एक ऐसा

---

१ ओगडेन अँड रिचर्डस - दि मीनिंग ऑफ मीनिंग - पृ.क्र.२०५।

२ ई.जोन्स - पेपर ऑन साइको एनेलसिस - अध्याय ८, पृ.क्र.१६३।

३ सी.एम.बोवरा - हेरिटेज ऑफ सिम्बोलिज्म - पृ.क्र.२१०।

४ पी.गार्डनर - सिम्बोलिज्म - ग्रीक अँड रोम (एन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन अँड एथिक्स - पृ.क्र.१३९।

५ एस.के.लेंगर - फिलींग अँड फॉर्म - पृ.क्र.११।

साधन है,जो हमें अमूर्तन की शक्ति प्रदान करता है। अस्पष्ट तथा अदृश्य अप्रस्तुत, प्रतीकों के माध्यम से मूर्त होता है।

(२४) फ्रायड ने प्रतीक का संबंध अपने प्रसिध्द मनोविश्लेषण सिध्दांत से स्थापित किया है। उसके अनुसार मनुष्य चरित्र की वास्तविकता को जानने के लिए उसके अवचेतन मन का विश्लेषण आवश्यक है। फ्रायड प्रतीक को अचेतन मन की कल्पना की सृष्टि कहते हैं।

(२५) 'प्रतीक' एक शब्द या बिंब है, जो अपने से कुछ अलग संकेतित करता है --" Symbol a word or image that significs something other than what it represents."[1]

(२६) प्रतीक जो कुछ संकेतित करता या कहता है, वह उससे भी अधिक सशक्त अभिव्यक्त करता है। " I (symbol) simply means an expression which suggests more than it says."[2]

(२७) प्रतीक सशक्त अभिव्यक्ति का एक विशिष्ट कलात्मक माध्यम है। रचनाकार, प्रतीकों के माध्यम से कुछ अधिक सशक्त,सुस्पष्ट और आकर्षक कह लेता है। 'शब्द या प्रतीक अपने मूल उद्गम रूप में भौतिक या दृश्य जगत् सापेक्ष होते हैं, पर जब उन्हें तात्त्विक अर्थवत्ता देनी होती है, तब वे प्रतीकात्मक संदर्भ का प्रतिनिधित्व करते हैं।'[3]

(२८) प्रतीक अनिवार्यतः एक ऐसा संकेत है, जो किसी अर्थ को व्यंजित करता है -- ' Any datum may be symbol, if it means something or operated as a sign."[4]

---

१ बैटल डच - पोएट्री हैंड बुक - पृ.क्र.१५५।

२ डेविड डाइचेस - अ स्टडी ऑफ लिटरेचर - पृ.क्र.३६।

३ डब्ल्यू.एम.अर्बन - लैंग्वेज ऐंड रिऐलिटी - पृ.क्र.६४३।

४ आर.बी.पेरी - अ जनरल थिअरी ऑफ वैल्यू - पृ.क्र.४०८।

प्रतीक संबंधी इन परिभाषाओं एवं धारणाओं का अनुशीलन करने पर सहज ही इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है, कि ये समस्त प्रतीक परक विचारधाराएँ न्यूनाधिक रुप में मूलत: समान हैं और प्रतीक की निम्नलिखित विशेषताओं को स्पष्ट करती है --

(१) प्रतीक व्यक्तिचेतना की अभिव्यक्ति का जीवंत माध्यम है।

(२) प्रतीक अगोचर, अदृश्य या अप्रस्तुत तथ्य या वस्तु की भावात्मक अभिव्यक्ति करने वाला गोचर, प्रस्तुत दृश्य या वस्तु है।

(३) रस, गुण, कार्य, आकार, विशेषता आदि में प्रतीक उस अप्रस्तुत तथ्य का वस्तु के समारुप होता है और उस अप्रस्तुत वस्तु, भाव, विचार, जाति, संस्कृति, देश या क्रियाकलाप का प्रतिनिधित्व करता है।

(४) प्रतीक का इस प्रकार चित्रण या रेखन होता है।

(५) प्रतीक अर्थसमूह है, जिसकी लाक्षणिकता समाप्त भी होती है।[१]

(६) प्रतीक हमारे मन में तत्काल किसी भाव को जाग्रत करता या स्वरुप उत्पन्न करता है।

(७) प्रतीक अपने काल, संस्कृति आदि के मान्यताओं से प्रभावित रहता है।

(८) प्रतीक काव्य की स्वाभाविक सरसता को बाधित नहीं करता है, अपितु उसे द्विगुणित सरस काव्य बना देता है।

(९) प्रतीक अपने विशिष्ट अर्थ में प्राय: रुढ हो जाता है। प्रारंभ में नये प्रतीक व्यक्तिगत भी होते हैं, किंतु शनै: शनै: उनमें भी रुढता आ जाती है।

(१०) प्रतीक का अस्तित्व स्वतंत्र होता है।[२]

---

१ डॉ.केदारनाथ सिंह - हिंदी के प्रतीक नाटक और रंगमंच - पृ.क्र.२३।

२ डॉ.[illegible] - कामायनी में प्रतीक विधान - पृ.क्र.६-७।

प्रतीक की महत्व - प्रतिष्ठा --

मानव जीवन का कोई भी कोना प्रतीकों से अछूता नहीं है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर उसका पूर्ण साम्राज्य है। प्रतीकों की सबसे बड़ी महत्ता यह है, कि उनके उपयोग से उन बातों की अभिव्यंजना भी पूर्णत: हो जाती है, जिनके निदर्शन में वाणी असमर्थ अथवा मूक होती है। जो भाव लेखक अनेक पृष्ठ रंगाकर भी स्पष्ट नहीं कर पाता, उसी भाव को प्रतीकों के माध्यम से एक-दो पंक्तियों में ही अभिव्यक्त कर देता है। प्रतीक किसी भाव को कम-से-कम शब्दों में प्रकट कर देते हैं। ये विचारों को मूर्तरूप प्रदान करते हैं, अन्यथा संभवत: ये विचार अव्यक्त ही रह जाते। उदा.- ` आकाश ` विशालता का प्रतीक है। कोई जीवन को ` काँटोंभरा ` माने, तो हम समझ सकते हैं, कि ` काँटे ` , दुखभरे जीवन का प्रतीक है।

प्रतीक मानव अभिव्यक्ति का एक अनिवार्य उत्पादन है। ` मनुष्य का स्वभाव इतना प्रतीकात्मक है, कि वह अपनी धारणा के अनुकूल हर एक संकेत को प्रतीक में बदलता है। प्रतीकात्मक स्वभाव का ही परिणाम है, कि साहित्यकार और कलाकार ऊंची से ऊँची कल्पना कर लेते हैं।

साहित्य में प्रतीक विधान का महत्व अनुभूति को व्यवस्थित करने और भाव-प्रसार में सहयोग देने का है। सामान्यत: प्रतीक अप्रस्तुत कथन की एक महत्वपूर्ण सांकेतिक पध्दति है। व्यंजनाश्रित होने के कारण यह भाव गोपन एवं भाव प्रकाशन का समर्थ माध्यम है। इसीलिए कार्लाइल की धारणा थी, कि उसमें भाव-गोपन के साथ-साथ भाव-प्रकाशन भी रहता है। ` [१]

अनादि काल से ही मानव इस सम्प्रेषण-साधन का प्रयोग करता आया है, परंतु वर्तमान में इसका प्रयोग बहुत जोर पकड़ गया है। वस्तु: आज मानव की

---

१ जॉर्ज गागमन - दि सिम्बॉलिस्टिक एलीमेन्ट इन लिटरेचर - पेज-२ ।

संवेदनाएँ, विचार और जीवन-दशा इतनी जटिल और विकृत हो गयी है, कि वह अभिव्यक्ति के प्रचलित सरल माध्यमों से अपनी बात ठीक-ठीक सम्प्रेषित नहीं कर पाता। फलस्वरुप अपनी रुग्ण जीवनदृष्टि, कटुता, संत्रास, विघटन और मूल्यहीनता को सही रुप और भाषा देने में अथवा अपनी जटिल एवं विकृत संवेदनाओं को इंद्रियगम्य तथा सम्प्रेषणीय बनाने के लिए वह अनायास ही प्रतीकों का आश्रय ग्रहण कर लेता है। "जीवन का ऐसा अप्रकट सत्य, जिसकी अभिव्यंजना अन्यान्य माध्यमों से नहीं की जा सकती, उनकी अभिव्यक्ति के लिए प्रतीकों का अवलम्बन लेकर अप्रत्यक्ष को प्रत्यक्ष करने का कार्य किया जाता है।"[१] इसी में प्रतीक की उपयोगिता है।

प्रतीक स्वत: ही प्रतीक है, 'गागर में सागर' का, अर्थात् प्रतीक आकर्षक एवं चमत्कारपूर्ण पध्दति से सूक्ष्म, अमूर्त एवं व्यापक सौंदर्य को अपने में समाविष्ट कर लेता है। अत: प्रतीक सौंदर्य का प्रतिनिधित्व करता है। अनुभूति पक्ष तथा अभिव्यक्ति पक्ष अथवा भावात्मक और अभिव्यंजनात्मक दोनों ही दृष्टियों से प्रतीक विधान की साहित्यिक उपयोगिता है। प्रतीक विधान एक ओर मानव चेतना के गहन स्तरों पर अनुभव किये हुए अवर्णनीय भावों और मानवीय संवेदनाओं को स्थिर और सजीव रुप देता है तथा दूसरी ओर अनन्त विस्तृत अर्थ को शब्दों की परिमित सीमा में बाँधकर उसे अभिव्यक्ति की क्षमता प्रदान करता है। काव्य में प्रतीक सूक्ष्म सौंदर्य का अभिव्यक्तीकरण तथा अमूर्त सौंदर्य का प्रत्यक्षीकरण करने में समर्थ है। संभवत: प्रतीकों के अभाव में सूक्ष्म, अमूर्त एवं अतींद्रिय भावों एवं संवेदनाओं की अभिव्यक्ति संभव ही नहीं, अथवा उस अभिव्यंजना में वह प्रौढ़ता तथा सशक्तता नहीं आती है, जो साहित्य में प्रतीकों के प्रयोग से स्वत: ही परिलक्षित होती है।

वैसे भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रतीकों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

---

१ रमाशंकर मिश्र - नयी कविता - संस्कार और शिल्प - पृ.क्र.२०५।

भाषा, साहित्य,कला,धर्म,दर्शन और यहाँ तक कि हम जाने - अनजाने प्रतीकों की दुनिया में ही जीते हैं। भाषा वैज्ञानिकों का अनुमान है, कि प्रारंभिक उच्चरित ध्वनियाँ भी प्रतीक रही होंगी। आदि मानव ने जब अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए प्रथम शब्द उच्चरित किया होगा, प्रतीकों का आरंभ भी तभी से हुआ होगा। इस प्रकार प्रतीकों का आरंभ आदि मानव के प्रथम उच्चरित शब्दों द्वारा स्वीकार किया गया है। इसी दृष्टि से प्रतीकों से शब्दों और शब्दों से भाषा की सृष्टि हुई। यह भाषा के विकास का एक अनवरत क्रम है। अत: प्रतीक का उद्गम मानव मन का एक नैसर्गिक अभियान है।[१]

प्रतीक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। विस्तार से बचने के लिए काव्य में प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है, तथा प्रतीक अलंकारों की भाँति काव्य को उत्कर्ष तथा सौंदर्य प्रदान करते हैं। प्रतीक मानव मन की सुप्त या दमित भावनाओं को जाग्रत करते हैं तथा उस विषय की व्याख्या करते हैं। अपनी व्यंजना-शक्ति के द्वारा,प्रतीक,मानव मन की सुप्त भावनाओं को उघाड़कर काव्य के सौंदर्य का उद्घाटन करते हैं। प्रतीक सूक्ष्म का प्रत्यक्षीकरण करते हुए उसे मनोनुकूल आवरण प्रदान कर अभिव्यक्ति को अधिक सशक्त और प्रभावपूर्ण बना देते हैं। `प्रतीकवादी कवि और दार्शनिक एक जगह पर सहमत हैं, कि प्रतीकों में असीम अभिव्यंजना की शक्ति निहित है और वे असीम व्यंजना को जगा सकते हैं।`[२] अत: प्रतीकों में वह अद्भुत शक्ति है, कि संकेत मात्र से वह हमारे मन में अनेक भावों को तत्काल जाग्रत कर देते हैं। प्रतीक अपनी संक्षिप्तता, अस्पष्टता तथा रहस्यात्मकता के कारण कौतूहल का विषय है, जो अपने में विभिन्न अर्थों की संभावनाएँ धारण करता है।

---

१ डॉ.वीरेन्द्र सिंह - हिन्दी काव्य में प्रतीकवाद का विकास - पृ.क्र.१।

२ डॉ.रमेश गौतम - हिंदी के प्रतीक नाटक - पृ.क्र.१९।

प्रतीकों के माध्यम से सृष्टि का अर्थ और अस्तित्व गौरवान्वित होता है। धर्म,दर्शन,कला,विज्ञान,भाषा और मनोविज्ञान आदि जीवन के संपूर्ण क्षेत्रों में प्रतीकों का ही साम्राज्य है, क्योंकि इनके बिना अभिव्यक्ति का कोई मूल्य नहीं है।'[1]

निष्कर्ष

प्रतीक गागर में सागर की स्थिति का स्वत: प्रतीक है। मानव-जीवन पूर्णत: प्रतीकाश्रित है। नि:संदेह समस्त साहित्य प्रतीकों के द्वारा ही पल्लवित, पुष्पित एवं सुगंधित होता है। प्रतीकों बिना साहित्य रसहीन लगता है।

---

१ डॉ.केदारनाथ सिंह - हिंदी के प्रतीक नाटक और रंगमंच - पृ.क्र.१७।